कालीन मेले में पहले दिन 30 देशों के 153 आयातक पहुंचे

ब्रिटेन, अमेरिका के 66 और आस्ट्रेलिया के 20 आयातकों ने कराया है पंजीकरण, 255 निर्यातक आए

जागरण संवाददाता, भदोही : चार दिवसीय इंडिया कारपेट एक्सपो के 47वें संस्करण का मंगलवार को शुभारंभ हो गया। ढाई सौ करोड़ रुपये की लागत से बने कारपेट एक्सपो मार्ट में आयोजित मेले में पहले दिन अमेरिका, जर्मनी फ्रांस सहित विश्व के 30 देशों के 153 आयातकों और उनके 185 प्रतिनिधियों ने मखमली व कलात्मक कालीनों की जांच परख की। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली, नीदरलैंड, पोलैंड, आस्ट्रेलिया, रूस, कनाडा, ब्राजील, अर्जेंटीना, तुर्किये, जापान के कुछ आयातक यहां पहुंच गए हैं और कुछ अभी आएंगे। कुछ निर्यातकों को आर्डर भी मिले, जबकि अधिकतर स्टालों पर मामला पूछताछ तक सीमित रहा।

सीईपीसी चार माह से इंडिया कारपेट एक्सपो की तैयारियों में जुटा था। विश्व के 65 देशों के 600 आयातकों को मेले में आमंत्रित किया गया है। इनमें 56 देशों के करीब 500 आयातकों ने पंजीकरण कराया है। ब्रिटेन और अमेरिका के 66 जबकि जर्मनी, फ्रांस सहित अन्य यूरोपीय देशों के 38 आयातकों ने पंजीकरण कराया है। आस्ट्रेलिया के आयातकों की संख्या 19 है जो उत्साह बढ़ाने वाली बात है। मेले में भदोही, मीरजापुर, वाराणसी, जयपुर, आगरा, श्रीनगर, पानीपत सहित

भदोही में कारपेट एक्सपो मार्ट में मंगलवार से शुरू हुए कालीन मेले में एक स्टाल पर उत्पादों का अवलोकन करतीं रूस की आयातक • जागरण

विभिन्न स्थानों के 255 निर्यातकों ने स्टाल सजाया है, जिन पर एक से बढ़कर एक कलात्मक कालीनों को प्रदर्शित किया है।

भारतीय कालीनों का 72 देशों में निर्यात किया जाता है। इनमें सबसे बड़ा खरीदार अमेरिका है। सीईपीसी के अनुसार देश के कुल कालीन निर्यात में अमेरिका की भागीदारी 58 प्रतिशत है। पांच-पांच प्रतिशत निर्यात के साथ दूसरे स्थान पर जर्मनी और ब्रिटेन हैं। आस्ट्रेलिया में चार व यूएई दो प्रतिशत कालीन निर्यात होता है। शेष 26 प्रतिशत कालीन की खरीद-बिक्री भारत में की जाती है। भदोही के निर्यातक एजाज अंसारी ने बताया कि पहले दिन इक्का-दुक्का ग्राहकों ने पूछताछ की। पहला दिन था इसलिए अमेरिका, जर्मनी के ग्राहकों की संख्या कम रही। पंकज बरनवाल के अनुसार जब तक प्रमुख खरीदार नहीं आएंगे, मेले से अधिक उम्मीद नहीं की जा सकती। आयोजक कालीन निर्यात सवंर्धन परिषद (सीईपीसी) के पदाधिकारियों का कहना है कि पंजीकरण कराने वाले शत प्रतिशत आयातकों की भागीदारी संभव नहीं, लेकिन 70 प्रतिशत भी आ गए तो कालीन उद्योग के लिए बहुत अच्छा होगा। मेला खत्म होने के बाद निर्यातकों से मिले फीडबैक के आधार पर व्यवसाय का आंकड़ा स्पष्ट होगा। अभी पहले दिन कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

स्टाल पर बंदियों का बनाया कालीन देखते केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह • जागरण

छह वर्षों में 350 बिलियन डालर की इंडस्ट्री बनाना है : गिरिराज

जासं, भदोही : केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने मंगलवार को यहां चार दिवसीय कारपेट एक्सपो मार्ट का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि 2030 तक टेक्सटाइल उद्योग को 350 बिलियन डालर (29,400 अरब रुपये) की इंडस्ट्री बनाना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विजन है कि आज देश का निर्यात 80 लाख करोड़ रुपये हो चुका है। 2014 से पहले यह 19 लाख करोड़ रुपये था। कालीन का निर्यात 16 हजार करोड़ रुपये तक सीमित न रहे, इसे 50 हजार करोड़ रुपये तक ले जाने की कोशिश की जानी चाहिए। प्रदेश सरकार की सराहना करते हुए कहा कि नोएडा में हुए इंटरनेशनल ट्रेड फेयर में 10 हजार करोड़ का व्यवसाय हुआ। सरकार उद्योग व रोजगार को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। गिरिराज ने प्रदर्शनी हाल में लगे स्टालों का अवलोकन किया। भदोही में बुनकरों के मुफ्त उपचार के लिए ईएसआइ अस्पताल बनाने के लिए जिलाधिकारी को जमीन तलाशने के निर्देश दिए तो स्पीनिंग मिल, रा-मैटेरियल बैंक बनाने के लिए प्रस्ताव भेजने के लिए कहा। राज्य वस्त्र मंत्री पबित्रा मार्गेरिटा ने कहा कि कालीन उद्योग से जुड़े उद्यमी प्रस्ताव दें, उनकी समस्या के समाधान का प्रयास होगा। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के मंत्री राकेश सचान व अन्य मौजूद रहे।